International Journal of Multidisciplinary Research and Development

Volume: 2, Issue: 7, 80-85
July 2015
www.allsubjectjournal.com
e-ISSN: 2349-4182
p-ISSN: 2349-5979
Impact Factor: 3.762

सुरेश सिंह मेहता
सहायक प्रवक्ता, षिक्षा विभाग
एस0आर0एम0 विष्वविद्यालय,
मोदीनगर गाजियाबाद

डा0 मन्जू सिंह
सहायक प्रवक्ता, षिक्षा विभाग
एस0आर0एम0 विष्वविद्यालय,
मोदीनगर गाजियाबाद
201204

Correspondence:
सुरेश सिंह मेहता
सहायक प्रवक्ता, षिक्षा विभाग
एस0आर0एम0 विष्वविद्यालय,
मोदीनगर गाजियाबाद
201204

‘‘माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन’’

सुरेश सिंह मेहता, डा0 मन्जू सिंह

सारांष–
बालक राष्ट्र के अमूल्य निधि होते हैं। अतः किसी भी राष्ट्र को उन्नति एवं समृद्धि की ओर अग्रसर करने में इनकी भूमिका महत्वपूर्ण होती है। परन्तु आज भौतिकवादी युग में मनुष्य के दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने के लिए तथा सामाजिक एवं नैतिक विवादों को शान्त करने में वही व्यक्ति अपना योगदान दे सकता है जो मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति हो। मानसिक स्वास्थ्य के द्वारा ही विद्यार्थियों में विनम्रता, सत्यता, सहिष्णुता, ईमानदारी, सहानुभूति, प्रेम, त्याग, अहिंसा जैसे अनेक श्रेष्ठ मूल्यों का विकास किया जा सकता है। मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति के समग्र संतुलन का परिचायक है और इसे हम व्यक्ति की ऐसी क्षमता क रूप में देखते हैं जो उसके व्यक्तिगत, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इच्छाओं एवं मानदण्डों में संतुलन स्थापित करती है। दूसरे शब्दों में यह व्यक्ति के पूर्व क्रियाकलापों तथा समायोजन को और उन्नत बनाने में सहायता प्रदान करने वाली क्षमता है। मानसिक स्वास्थ्य के लिए जीवन के किसी एक क्षेत्र में सुसमायोजित होना पर्याप्त नहीं है। मानसिक स्वास्थ्य से सम्पन्न शिक्षा ही विद्यार्थियों में शैक्षिक विकास के साथ–साथ सांस्कृतिक, व्यावसायिक, सामाजिक तथा नैतिक विकास में गतिशील एवं जागरुक बनाकर उनमें जीवन के प्रति उदार दृष्टिकोण को विकसित करती है। इन्ही सब कारणों को ध्यान में रख कर शोधकर्ता ने इस शोध पत्र में माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया है।

कुंजी शब्दः मानसिक स्वास्थ्य, शैक्षिक उपलब्धि, माध्यमिक स्तर।

1. प्रस्तावना

‘शिक्षा ही जीवन है, जीवन ही शिक्षा है’ – इस कथन के अनुसार विभिन्न विचारकों ने एकमत से शिक्षा की आवश्यकता को स्वीकार किया है और माना है कि शिक्षा के अभाव में मानव विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। शिक्षा ही उसके शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं सामाजिक विकास को दिशा प्रदान करती है। शिक्षा शब्द का स्त्रोत कुछ भी रहा हो परन्तु इसका अर्थ है कि बालक की जन्मजात शक्तियों का विकास अथवा मूल प्रवृत्तियों का शोधन या इन्द्रियों का प्रशिक्षण ताकि वह जीवन में अनुशासित रहे, बालक की सम्पूर्ण सम्भावनाओं का विकास।

शिक्षा में मनुष्य की शारीरिक अभिवृद्धि और उसके शारीरिक, मानसिक, भाषायी, संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास का अध्ययन किया जाता है। मनुष्य की शिक्षा एवं विकास में उसके मानसिक स्वास्थ्य एवं उसके समायोजन की अहम् भूमिका होती है परन्तु आज हमारे समाज में संघर्ष, अनाचार एवं अत्याचार हो रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने जीवन को किस प्रकार सुखी एवं सन्तुष्ट बना सकते हैं जिससे हमारा शारीरिक स्वास्थ्य ही नहीं बल्कि मानसिक स्वास्थ्य भी स्वस्थ रहे क्योंकि स्वस्थ मानसिक विकास के पदों पर चलकर मनुष्य अपनी शैक्षिक उपलब्धियों के उन उद्देश्यों को प्राप्त कर सकता है जिसके लिये वो इतने अथक प्रयास कर रहा है।

मनोविज्ञान की जड़े दर्शनशास्त्र में है, किन्तु पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों ने आत्मा और मन को संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं के द्वारा अपदस्थ कर दिया है। भारतीय दर्शन और मनोविज्ञान अभी भी आत्मा चेतना और मन को मानव व्यवहार का महत्वपूर्ण आधार मानता है। शरीर, मन और आत्मा तीनों ही एक–दूसरे से घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। यही कारण है कि भारतीय मनोविज्ञान में एक ओर तो ‘शरीर माध्यम खलु धर्म साधनं’ कहा गया है तो दूसरी ओर सब कुछ आत्मा के आश्रित रूप में प्रतिपादित किया गया है। अतः मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य को परस्पर आश्रित समझा गया है। मानसिक स्वास्थ्य इस बात पर निर्भर करता है कि हमारे विचार सकारात्मक हैं या नकारात्मक।

1.1 अध्ययन की आवष्यकता–

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र के लिए हम व्यक्तियों को तीन भागों में विभाजित कर सकते हैं – शिक्षार्थी, शिक्षक और प्रशासक। शिक्षा बाल केन्द्रित होती है, बालकों की शिक्षा व्यवस्था उनकी शारीरिक, मानसिक योग्यताओं और क्षमताओं के आधार पर की जाती है। हमारा युवा वर्ग जो देश के भविष्य का निर्माता है वो ही आज अपने जीवन में आने वाली विभिन्न प्रकार की कठिनाइयों, परेशानियों तथा तनाव इत्यादि का सामना करने में असमर्थ होता जा रहा है वो शिक्षा के क्षेत्र में पाने वाली शैक्षिक उपलब्धियों के दौरान आने वाली विषम परिस्थितियों तथा असफलताओं का सामना डटकर नहीं कर पाता है और उनसे हारकर अपने जीवन को अँधकार का रूप दे देता है।

अतः विद्यार्थियों में अपनी शैक्षिक उपलब्धियों को पाने के लिए नकारात्मक तथा सकारात्मक रूप से आने वाले विचारों के प्रति उनका दृष्टिकोण कैसा है, वो अपने नकारात्मक सोच को कैसे सकारात्मक बनायें, यह जानने के लिए ही शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन चुना है। इन्हीं तथ्यों को ध्यानगत करते हुए शोधकर्ता ने निम्नांकित समस्या का शोध हेतु चयन किया है।

1.2 अध्ययन की प्रामाणिकता–

शोध कर्ता ने ष्माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययनश प्रकरण का चुनाव किया है चूकिं मानसिक स्वास्थ्य पर आधारित शिक्षा विद्यार्थियों की मूल प्रवृत्तियों तथा संवेगों के परिष्कार में भी सहायता प्रदान करती है तथा उन्हें परस्पर एक–दूसरे के साथ सहयोग करने और काम करने की प्रेरणा भी देती है। अतः शिक्षा द्वारा ही व्यक्ति में अपने जीवन में अपने स्वास्थ्य संबंधी सभी मूल्यों का निर्माण एवं विकास किया जाना चाहिए।

विषय की घोषणा– ''माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन।''

1.3 प्रयुक्त पदों की क्रियान्वित परिभाषा– प्रस्तुत लघुशोध पत्र में प्रयुक्त पदों की परिभाषा का तात्पर्य है कि शोध में आने वाले वे पद जो समस्या केन्द्रित हैं, को एक परिधि के भीतर सीमित करना, उन मिलते–जुलते प्रश्नों से भिन्न एवं अलग करना जो सम्बन्धित परिस्थितियों में पाये जाते है।

प्रस्तुत लघुशोध में निम्नलिखित प्रमुख पदों का परिभाषीकरण किया गया है–

मानसिक स्वास्थ्य– मानसिक स्वास्थ्य का सरल शब्दों में अर्थ उस स्वास्थ्य से है जिसका सम्बन्ध मनस या मन से होता है। शारीरिक स्वास्थ्य जहॉ शरीर के स्वास्थ्य से अपना सम्बन्ध रखता है और इस रूप में शरीर के अंग प्रत्यंगो की उचित वृद्वि, विकास और उनके ठीक प्रकार से संचालन, देखभाल और स्वस्थ रहने की बात करता है।

कट्स एवं मोसले के अनुसार– ''मानसिक स्वास्थ्य वह योग्यता है जो हमें अपने जीवन की कठिन परिस्थितियों में समायोजन करने में सहायक होती है।''

शैक्षिक उपलब्धि– षिक्षण संस्थानों के अर्न्तगत षिक्षकों के द्वारा जो षिक्षण प्रक्रिया संचालित की जाती है एवं जिसके द्वारा बालकों में ज्ञानार्जन एवं जानकारियां अर्जित की जाती हैं वह उसकी शैक्षिक उपलब्धि कही जा सकती है। षिक्षा एवं उद्देष्पूर्ण प्रक्रिया है, षिक्षा प्रक्रिया के द्वारा छात्रों के व्यवहार में पूर्ण निर्धारित संसोधन करने का प्रयास किया जाता है।षैक्षिक उपलब्धि दो शब्दों से मिलकर बना है। शैक्षिक और उपलब्धि अर्थात् विद्यालय से संबंधित शैक्षिक अनुभवों के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में होने वाले परिवर्तन को ही शैक्षिक उपलब्धि कहा जाता है।

सुपर (1967) के अनुसार ''षैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य है कि विद्यार्थी ने षिक्षण के उपरांत क्या और कितना सीखा, तथा वह कोई कार्य कितनी भलीं भांति कर लेता है।''

1.4 अध्ययन का उद्देश्यः–

किसी भी कार्य को करने के पीछे कोई न कोई उद्देश्य होता है, उद्देश्य निर्धारित करके किया जाने वाला कार्य अवश्य ही सफल होता है। शिक्षा भी एक सोद्देश्य क्रिया है। उद्देश्य ही शिक्षा प्रक्रिया में लगे व्यक्तियो को क्रियाशील बनाती है। उद्देश्य निर्धारण के बिना शिक्षा की कोई समुचित योजना नहीं बनायी जा सकती है, न ही सही ढंग से क्रियान्वित किया जा सकता है।

प्रस्तुत लघुशोध में **''माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन''** निम्नलिखित उद्देश्यों के आधार पर किया जा रहा है।

प्रस्तुत अध्ययन के निम्न उद्देश्य हैंः–

1.4.1 माध्यमिक स्तर पर छात्र एवं छात्राओं के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन।

1.4.2 माध्यमिक स्तर पर छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.5 परिकल्पनायेंः–

परिकल्पना का अर्थ है– पूर्व चिन्तन यह अनुसंधान की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है। इसका तात्पर्य है कि किसी समस्या के विश्लेषण व परिभाषीकरण के पश्चात् इसमें कार्य और कारण के सम्बन्धों का पूर्व चिन्तन कर लिया जाता है। यह अनुमान अपने प्रारम्भिक ज्ञान और अनुभव के आधार पर लगाया जता है। इसी पूर्वानुमान को परिकल्पना कहा जाता है। प्रस्तुत लघुशोध में निम्न परिकल्पना का निर्माण किया जा सकता है।

1.5.1 माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नही है।

1.5.2 माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं हैं।

1.5.3 माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के समायोजन (भावनात्मक स्थिरता) प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं है।

1.5.4 माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के समायोजन (पूर्णतः प्राप्तांकों) में सार्थक अन्तर नहीं है।

1.5.5 माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के समायोजन (स्वायतता) प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं है।

1.5.6 माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के समायोजन (सुरक्षा–असुरक्षा) प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं है।

1.5.7 माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के समायोजन (स्व–अवधारणा) प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं है।

1.5.8 माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के समायोजन (योग्यता) प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नही है।

1.6 अध्ययन की परिसीमायें :–

प्रस्तुत शोध कार्य का सीमांकन न्यादर्श, समय, क्षेत्र आदि को ध्यान में रखकर निम्न प्रकार से किया गया हैः–

1.6.1 प्रस्तुत अध्ययन केवल गाजियाबाद क्षेत्र के विद्यार्थियों को न्यादर्श रूप में लेकर प्रतिपादित किया गया है।

1.6.2 न्यादर्श में केवल माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

1.6.3 न्यादर्श में केवल 150 विद्यार्थियों को चुना गया है, जिसमें 75 छात्र एवम् 75 छात्रायें सम्मिलित हैं।

1.6.4 प्रस्तुत लघुशोध का अध्ययन विषय केवल मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि तक ही सीमित किया गया है।

2. अध्ययन की योजना व शोध प्रक्रिया

प्रस्तुत लघुशोध में शोधकर्त्ता द्वारा सर्वेक्षणात्मक विधि को प्रयुक्त किया जा रहा है, चूंकि प्रस्तुत अनुसंधान सर्वेक्षणात्मक है। प्रत्येक अनुसंधान एक विशेष प्रकृति की समस्या का वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करता है। प्रस्तुत लघुशोध में शोधकर्त्ता द्वारा प्रस्तावित शोध में परिकल्पनाओं के सत्यापन हेतु सर्वेक्षण विधि के आधार पर आंकड़ों को एकत्र किया जा रहा है। इस लघुशोध में शोधकर्त्ता का कार्य ''माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन'' के आधार पर आंकड़ों का संकलन ष्प्रश्नावली' के माध्यम से किया जा रहा है। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन के लिए **''डॉ अरूण कुमार सिंह'' एवं अल्पलता सेनश** द्वारा निर्मित **''मानसिक स्वास्थ्य मापनी''** नामक उपकरण का चयन किया गया है।

2.1 न्यादर्श का प्रारूप– प्रस्तुत लघुशोध हेतु शोधकर्त्ता द्वारा विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों से छात्र एवं छात्राओं का 200 न्यादर्श लेने का फैसला किया था परन्तु किन्ही कारणों से 150 न्यादर्ष ही प्राप्त हो पाये । प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता का प्रमुख उद्देश्य बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य एवम् शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना है। अतः शोधकर्त्रा ने उच्च माध्यमिक स्तर के ग्यारहवीं एवं बारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों एवं नवीं व दसवी कक्षाओं के छात्रों को अपने न्यादर्श में सम्मिलित किया है जिसमें–

2.1.1 बालक व बालिकाओं दोनों को न्यादर्श में लिया गया है।

2.1.2 गाजियाबाद की प्रतिनिधि शिक्षण संस्थाओं से न्यादर्श का चयन किया गया है, जिसको निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है–

क्र0सं0	विद्यालय का नाम	संख्या		कुल संख्या
		छात्र	छात्राऐं	
1.	छबिलदास पब्लिक स्कूल, पटेल नगर गाजियाबाद	75	–	75
2.	देहरादून पब्लिक स्कूल, संजयनगर गाजियाबाद	–	75	75
	कुल सं0	**75**	75	**150**

3. शोध में प्रयुक्त उपकरण

प्रदत्तों के संकलन से विश्वसनीय एवं वैध परिणाम प्राप्त हो सकें इसके लिए एक विश्वसनीय व वैध परीक्षण का चयन करना अनिवार्य होता है। अतः शोधकर्ता ने अन्य परीक्षणों यथा अवलोकन, प्रश्नावली, साक्षात्कार तथा समाजमिति की तुलना में उपयुक्त परीक्षण को वैध एवं विश्वसनीय पाया है। अतः प्रस्तुत अध्ययन के लिए **''डॉ अरूण कुमार सिंह'' एवं ''अल्पलता सेन''** द्वारा निर्मित **''मानसिक स्वास्थ्य मापनी''** नामक उपकरण का चयन किया गया है।

अनुसंधान के प्रस्तुत अध्ययन में तथ्यों के संकलन के लिए प्रमाणित उपकरण का ही प्रयोग किया है, जो निम्न है–

परीक्षण को प्रयुक्त करने के लिए निम्नलिखित कारण हैं–

3.1 यह परीक्षण आसानी से उपलब्ध था।

3.2 परीक्षण का माध्यम हिन्दी था।

3.3 परीक्षण को विभिन्न समूहों पर बिना किसी कठिनाई के प्रशासित किया जा सकता है।

3.4 परीक्षण की भाषा अत्यन्त सरल थी तथा विद्यार्थियों को प्रश्नों को समझने में किसी भी प्रकार की कठिनाई नहीं हुई।

3.5 यह परीक्षण अपनी वैधता व विश्वसनीयता के कारण मानकीकृत है।

4. प्रदत्तों का सांख्यिकीय विष्लेषण एवं व्याख्या–

अनुसंधान कार्य में शोध परीक्षणों एवं अंकन के पश्चात् प्रदत्तों का संकलन एवं व्यवस्थापन किया जाता है तथा संकलित प्रदत्त प्राप्त प्रदत्त के रूप में जाने जाते हैं। प्राप्त प्रदत्त जब तक अर्थपूर्ण नहीं होते हैं तब तक उनकों कोई सांख्यिकीय विश्लेषण नहीं दिया जाता है। प्रदत्तों के विश्लेषण का अर्थ प्राप्त प्रदत्तों को अर्थपूर्ण बनाना या उपयुक्त सांख्यिकीय विश्लेषण के द्वारा परिणाम प्राप्त करना है। सार्थक परिणामों को प्राप्त करने के लिए प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण की सहायता से परिकल्पना का परीक्षण किया जाता है। इस कार्य में सांख्यिकी प्रविधियों का अपना विशेष महत्व है क्योंकि सांख्यिकी प्रविधियों के द्वारा ही आंकड़ों का विश्लेषण किया जाता है।

प्रस्तुत अध्याय में प्राप्त प्रदत्तों का सांख्यिकी विश्लेषण एवं व्याख्या की गयी है, जिससे उनके अन्तर्निहित अर्थ को पूर्ण रूप से स्पष्ट किया जा सकें। सांख्यिकीय विश्लेषण में विशेष रूप में मध्यमान प्रमाणित विचलन के मान व क्रान्तिक अनुपात की गणना की गयी है।

प्रस्तुत लघुशोध कार्य का उद्देश्य ''माध्यमिक स्तर के बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन'' तुलनात्मक अध्ययन करना है।

4.1 सारणी–

परिकल्पना 1. माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं हैं।

चर	वर्ग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रता स्तर (D.f.)	ज. मूल्य
मानसिक स्वास्थ्य	बालक	75	90.58	5.5	148	4.6''
	बालिकायें	75	95.52	5.2		

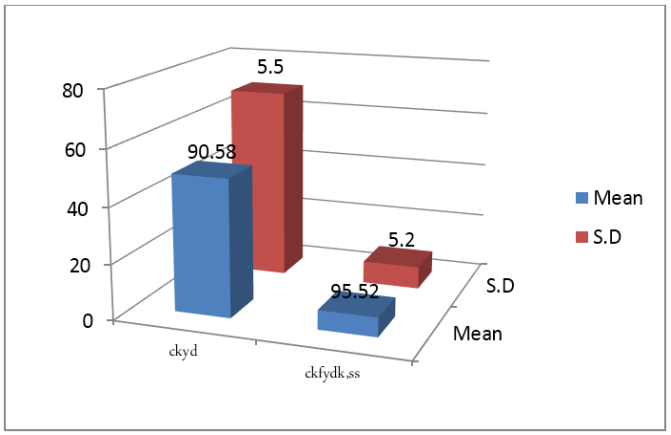

व्याख्याः सारणी नं04.1 के अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि दोनों ही समूह के विद्यार्थियो के मानसिक स्वास्थ्य के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 90.58 तथा 95.52 एवं मानक विचलन क्रमशः 5.5 तथा 5.2 है। जबकि इसका क्रान्तिक अनुपात ;ज.अंसनमद्ध 4.62 है जो 0.1 तथा 0.5 के स्तर पर सार्थक है अतः परिकल्पना नं01 (माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं हैं) अस्वीकृत की जाती है।

इसके आधार पर हम कह सकते है कि माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर है।

सारणी 4.2

परिकल्पना 2. माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के समायोजन (भावनात्मक स्थिरता) प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं है।

चर	वर्ग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रता स्तर (D.f.)	ज. मूल्य
मानसिक स्वास्थ्य	बालक	75	8.9	2.50	148	1.81′
	बालिकयें	75	9.7	1.62		

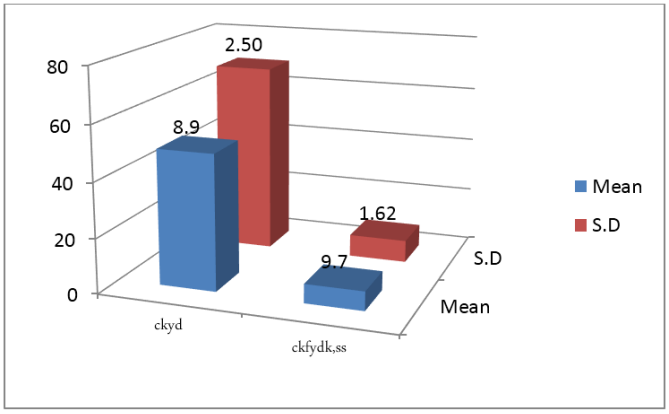

व्याख्याः सारणी नं04.2 के अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि दोनों ही समूह के विद्यार्थियो के मानसिक स्वास्थ्य के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 8.98 तथा 9.74 एवं मानक विचलन क्रमशः 2.50 तथा 1.62 है। जबकि इसका क्रान्तिक अनुपात ;ज.अंसनमद्ध 1.62 है जो 0.1 तथा 0.5 के स्तर पर सार्थक नही है अतः परिकल्पना नं02 (माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के समायोजन (भावनात्मक स्थिरता) प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं है।) स्वीकृत की जाती है।

इसके आधार पर हम कह सकते है कि माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य (भावनात्मक स्थिरता) में सार्थक अन्तर नही है।

सारणी 4.3

परिकल्पना 3. माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के समायोजन (पूर्णतः प्राप्तांकों) में सार्थक अन्तर नहीं है।

चर	वर्ग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रता स्तर (D.f.)	ज. मूल्य
मानसिक स्वास्थ्य	बालक	75	28.28	3.96	148	2. 86''
	बालिकयें	75	29.90	3.37		

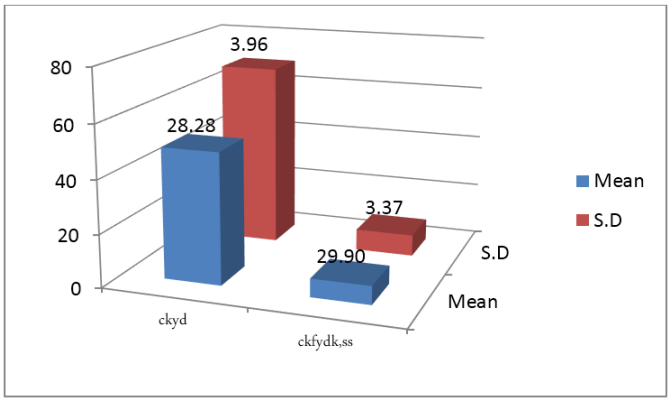

व्याख्या – सारणी नं04.3 के अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि दोनों ही समूह के विद्यार्थियो के मानसिक स्वास्थ्य के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 28.96 तथा 29.90 एवं मानक विचलन क्रमशः 3.96 तथा 3.37 है। जबकि इसका क्रान्तिक अनुपात ;ज.अंसनमद्ध 2.86 है जो 0.1 तथा 0.5 के स्तर पर सार्थक है अतः परिकल्पना नं03 माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के समायोजन (पूर्णतः प्राप्तांकों) में सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत की जाती है।

इसके आधार पर हम कह सकते है कि माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक समायोजन (पूर्णतः प्राप्तांकों) में सार्थक अन्तर है।

सारणी 4.4

परिकल्पना 4. माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के समायोजन (स्वायतता) प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं है।

चर	वर्ग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रता स्तर (D.f.)	ज. मूल्य
मानसिक स्वास्थ्य	बलक	75	11.64	6.40	148	0.66'
	बालिकयें	75	11.02	1.74		

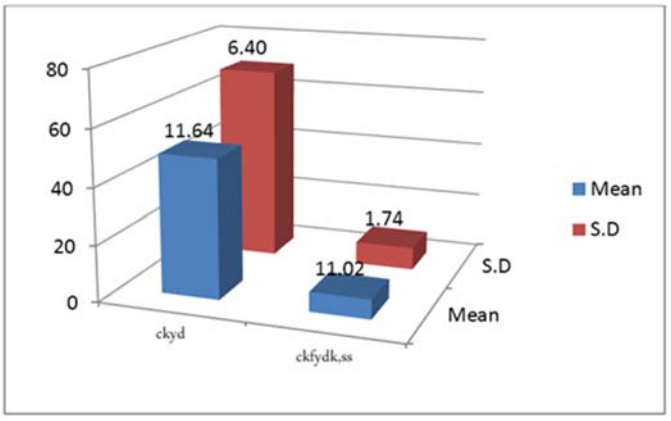

व्याख्याः सारणी नं04.4 के अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि दोनों ही समूह के विद्यार्थियो के मानसिक स्वास्थ्य के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 11.64 तथा 11.02 एवं मानक विचलन क्रमशः6.40 तथा 1.74 है। जबकि इसका क्रान्तिक अनुपात ;ज.अंसनमद्ध 0.66 है जो 0.1 तथा 0.5 के स्तर पर सार्थक नही है अतः परिकल्पना नं04 माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के समायोजन (स्वायतता) प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत की जाती है।

इसके आधार पर हम कह सकते है कि माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य (स्वायतता) में सार्थक अन्तर नही है।

सारणी 4.5

परिकल्पना 5. माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के समायोजन (सुरक्षा–असुरक्षा) प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं है।

चर	वर्ग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रता स्तर (D.f.)	ज. मूल्य
मानसिक स्वास्थ्य	बलक	75	9.46	1.46	148	1.18'
	बालिकयें	75	9.84	1.74		

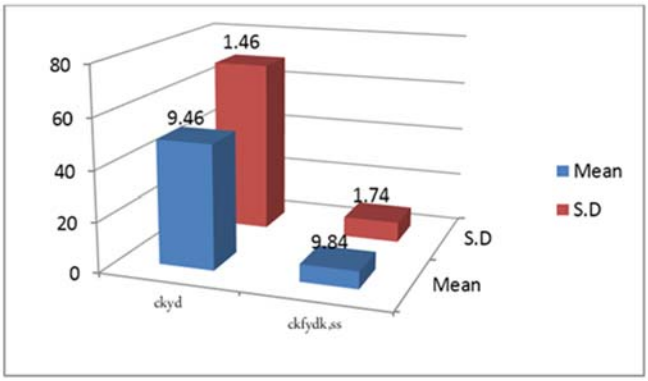

व्याख्याः सारणी नं04.5 के अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि दोनों ही समूह के विद्यार्थियो के मानसिक स्वास्थ्य के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 9.46 तथा 9.84 एवं मानक विचलन क्रमशः 1.46 तथा 1.74 है। जबकि इसका क्रान्तिक अनुपात ;ज.अंसनमद्ध 1.18 है जो 0.1 तथा 0.5 के स्तर पर सार्थक नही है अतः परिकल्पना नं0 5 स्वीकृत की जाती है।

इसके आधार पर हम कह सकते है कि माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य (स्वायतता) में सार्थक अन्तर नही है।

सारणी 4.6

परिकल्पना 6. माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के समायोजन (स्व–अवधारणा) प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नहीं है।

चर	वर्ग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रता स्तर (D.f.)	ज. मूल्य
मानसिक स्वास्थ्य	बलक	75	10.42	1.96	148	1. 97''
	बालिकयें	75	11.18	1.79		

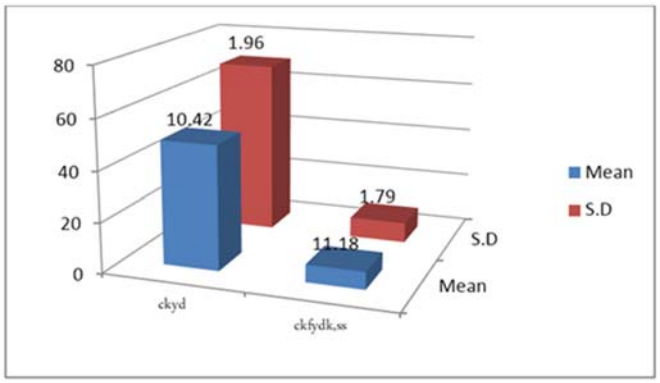

व्याख्याः सारणी नं04.6 के अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि दोनों ही समूह के विद्यार्थियो के मानसिक स्वास्थ्य के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 10.42 तथा 11.18 एवं मानक विचलन क्रमशः 1.96 तथा 1.79 है। जबकि इसका क्रान्तिक अनुपात ;ज.अंसनमद्ध 1.97 है जो 0.5 के स्तर पर सार्थक है अतः परिकल्पना नं0 6 अस्वीकृत की जाती है।

इसके आधार पर हम कह सकते है कि माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य (स्वधारणा) में सार्थक अन्तर है।

सारणी 4.7

परिकल्पना 7. माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के समायोजन (योग्यता) प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नही है।

चर	वर्ग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रता स्तर	ज. मूल्य
					(D.f.)	
मानसिक स्वास्थ्य	बलक	75	22.84	2.69	148	1.77′
	बालिकयें	75	23.84	3.02		

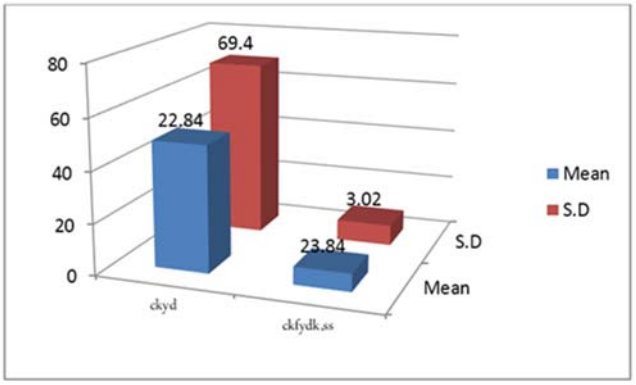

व्याख्याः सारणी नं04.7 के अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि दोनों ही समूह के विद्यार्थियो के मानसिक स्वास्थ्य के प्राप्तांकों का मध्यमान क्रमशः 22.84 तथा 23.84 एवं मानक विचलन क्रमशः 2.69 तथा 3.02 है। जबकि इसका क्रान्तिक अनुपात ;ज.अंसनमद्ध 1.77 है जो 0.1 तथा 0.5 के स्तर पर सार्थक नही है अतः परिकल्पना नं0 7 स्वीकृत की जाती है।

इसके आधार पर हम कह सकते है कि माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य (स्वधारणा) में सार्थक अन्तर नही है।

शैक्षिक उपलब्धि के माध्यों की तुलनाः

वर्तमान शोध अध्ययन का द्वितीय उद्देष्य शैक्षिक उपलब्धि माध्यों की तुलना करना है। उपलब्धि माध्यों की तुलना के अन्तर्गत 50 विद्यार्थियों का परीक्षण किया गया है। पूर्व में किये गये शोधों द्वारा स्पष्ट किया जा चुका है कि विभिन्न विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की योग्यतायें भिन्न भिन्न होती हैं, जिसका कारण वंषानुकूल अथवा वातावरण हो सकता है। इस शोध अध्ययन का दूसरा उद्देष्य शैक्षिक उपलब्धि के माध्यों की तुलना करना है। इस उद्देष्य से सम्बन्धित प्रदत्तों का विष्लेषण परीक्षण सांख्यिकीय प्रविधि द्वारा किया गया है, जो निम्नवत् है–

सारणी 4.8

परिकल्पना 8. माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि प्राप्तांकों में सार्थक अन्तर नही है।

चर	वर्ग	संख्या	माध्य	मानक विचलन	स्वतंत्रता स्तर (D.f.)	ज. मूल्य
मानसिक स्वास्थ्य	बलक	50	49.41	6.97	48	6.6''
	बालिकयें	50	69.40	8.13		

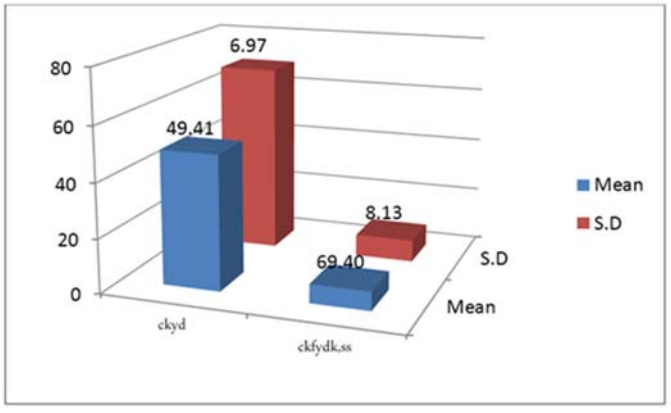

व्याख्याः सारणी नं04.8 के अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि की दृष्टि से माध्य प्राप्तांक क्रमषः 59.41 व 69.40 है एवं मानक विचलन क्रमशः 6.97 तथा 8.13 है। जबकि इसका क्रान्तिक अनुपात ;ज.अंसनमद्ध 6.6 है जो 0.1 तथा 0.5 के स्तर पर सार्थक है अतः परिकल्पना नं0 7 अस्वीकृत की जाती है।

इसके आधार पर हम कह सकते है कि माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

6. निष्कर्ष, सुझाव एवं शैक्षिक उपादेयता–

इस अध्ययन में शोध के परिणामों, निष्कर्षो, शैक्षिक उपयोगिताओं एवं आगामी अध्ययन हेतु सुझावों को प्रस्तुत किया गया है जो कि निम्नवत हैः–

1– माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर है।

2– माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य (भावनात्मक स्थिरता) में सार्थक अन्तर नही है।

3– माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक समायोजन (पूर्णतः प्राप्तांकों) में सार्थक अन्तर है।

4– माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य (स्वायतता) में सार्थक अन्तर नही है।

5– माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य (स्वायतता) में सार्थक अन्तर नही है।

6– माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य (स्वधारणा) में सार्थक अन्तर है।

7– माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य (स्वधारणा) में सार्थक अन्तर है।

8– माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर है।

6.1 आगामी अध्ययन हेतु सुझावः–

अनुसंधान के क्षेत्र व्यापक हैं तथा शोध कभी न होने वाली प्रक्रिया है। किसी शोध कर्ता के लिए इतने कम समय व सीमित साधनों के साथ ऐसी महत्वकांक्षा रखना न तो उचित है और न ही सम्भव है। इसीलिए शोधकर्ता ने गाजियाबाद शहर के चुने हुए विद्यालयों से माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थय व शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन नामक उद्देष्य को लेकर कार्य किया। इसके आगामी अध्ययन हेतु सुझाव निम्नवत् हैं–

(1) प्रस्तुत अध्ययन केवल 150 विद्यार्थियों पर ही सम्पादित किया गया है। ऐसा ही अध्ययन वृहत न्यादर्श पर भी किया जा सकता है।

(2) प्रस्तुत अध्ययन मे शोध कर्ता ने केवल माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को ही चुना है, अग्रिम शोध में महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों के विद्यार्थियों को भी चुना जा सकता है।

(3) प्राइमरी शिक्षकों एवं नर्सरी टीचर ट्रेनिंग (एन.टी.टी.) स्तर पर भी इस अध्ययन को किया जा सकता है।

(4) विभिन्न आयु वर्ग के छात्र एवं छात्राओं को इसमें सम्मिलित करके इसकी पुनरावृत्ति की जा सकती है।

(5) प्रस्तुत अध्ययन को विभिन्न आयु–वर्ग के छात्रों पर भी प्रतिपादित किया जा सकता है।

(6) आगामी शोध में ग्रामीण व शहरी विद्यालयों के विद्यार्थियों को लेकर भी शोध किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- मंगल, डॉ0 एस0के0, शुभ्राः ''प्रारम्भिक स्तर पर शारीरिक एवं स्वास्थ्य षिक्षा'',आर्याबुक डिपो 30 करोल बाग। प्रथम संस्करण 1999।
- पाण्डेय, कल्पलता और : ''शिक्षा मनोविज्ञान'' (भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि) टाटा एम0सी0 ग्राहिल पब्लिशिंग कम्पनी लि0, नई दिल्ली।
- सुनीता बोहराः''उच्च माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।''
- भटनागर, ए0बी0:''शैक्षिक मनोविज्ञान'', इन्टरनेशनल पब्लिशिांग हाऊस, मेरठ।
- श्रीवास्तव, डॉ0 ए0के0: ''शारीरिक शिक्षा व मानसिक शिक्षा'' दिल्ली इन्जीनियरिंग कॉलेज, बवाना रोड़, दिल्ली, प्रेरणा प्रकाशन। प्रथम संस्करण–2006
- रंगनाथन, डॉ0 एम0के0 : ''स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा'' विनापुस्तक मन्दिर, आगरा–2, तृतीय संस्करण–2007
- थानी, योगराज : ''शारीरिक शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधी शिक्षा'' प्रेरणा प्रकाशन रोहिणी, दिल्ली। प्रथम संस्करण–2006
- अस्थाना, विपिन व श्वेता : ''मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन'' सेंट जोंस कॉलेज, आगरा। विनोद पुस्तक मन्दिर।
- त्रिपाठी,जयगोपाल :मनोवैज्ञानिक अनुसंधान पद्धतियां, विनोद पुस्तक मंदिर,आगरा, 1994।
- मिश्र भास्कर : वैदिक षिक्षा मीमांसा भावना प्रकाषन, नई दिल्ली.1995।
- Buch, M.B. (Ed.) (1991) Fourth Survey of Research in Education, N.C.E.R.T. New Delhi.
- Buch, M.B. (Ed.) (1987) Third Survey of Research in Education, N.C.E.R.T. New Delhi
- Clyde, K. (1975) Values and Value Orientation in the Theory of Action, Harvard University.
- (1987) The International Encyclopaedia in Teaching a Teacher Education, Pergamon Press, New York.
- Buch, M.B. (Ed.) (1972) First Survey of Research in Education, C.A.S.E. Baroda.
- Singh M.K.:Internal assessment–Acource to educational practice, Educational India, Oct.1966, page-121-122.
- Dasgupta S.K.: I Mproving educational Inspection and supervision. Educational Indian Oct.1966. Pp.115-118.
- Dr.Sunitee Dutt. : New techniques and Methods in teacher education .January 1966, pp310-314.
- Vyas K.C. : The New froutier's of teachers educational India, January-1966, page-303.